इकाई 2 मानव विकास का पार्श्व-चित्र

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 मानव विकास क्या है?

2.2.1 मानव विकास के आयाम

2.2.2 मानव विकास और नव-उदारवाद

2.3 दक्षिण एशिया का आर्थिक आधार

2.4 दक्षिण एशिया में मानव विकास

2.4.1 ज्ञान : दक्षिण एशिया में शिक्षा

2.4.2 दीर्घ जीवन : स्वास्थ्य, आहार और स्वास्थ्य-रक्षा

2.4.3 शालीन जीवन-स्तर

2.4.4 लिंगभेद विवेचना

2.5 उत्तम शासन का प्रश्न

2.6 सारांश

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप पढ़ेंगे दक्षिण एशिया से संबंधित सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दे, यानी मानव विकास के बारे में। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि :

- मानव विकास संबंधी संकल्पना के उद्‌गम एवं विवर्धन का पता लगा सकें;
- मानव विकास की अवधारणा को परिभाषित कर सकें और उसको दक्षिण एशिया के संदर्भ में देख सकें;
- दक्षिण एशिया के संदर्भ में मानव विकास के अभिलक्षणों की चर्चा कर सकें;
- दक्षिण एशिया में मानव विकास का वर्तमान परिस्थिति का वर्णन कर सकें; और
- मानव विकास में सुधार लाने में शासन की भूमिका को पहचान सकें।

2.2 प्रस्तावना

मानव विकास की अवधारणा ने उस परम्परागत विकास संकल्पना के एक विकल्प के रूप में जन्म लिया जो अधिक विकास पर ज़ोर देती थी। समस्त आर्थिक या सामाजिक विकास का उद्देश्य मानव कल्याण होता है, पर लम्बे समय से, अधिकांश पाठ्य सामग्री एवं अन्तरराष्ट्रीय बहसों में, विकास को आर्थिक विकास के साथ पहचाना और किसी समाज की कुल आय अथवा प्रतिव्यक्ति आय के लिहाज से आँका जाता रहा है। समाज में आय-वितरण, सामाजिक विकल्पों की उपलब्धता तथा लोगों की क्षमता बढ़ाने के अवसरों का ध्यान नहीं रखा जाता। इन खामियों को दूर करने के प्रयास, विकास हेतु एक वैकल्पिक अभिगम को जन्म देने में फलित हुए। यही

वो मानव विकास प्रतिमान है जो मानव जीवन के पूर्वकालिक मात्रात्मक सुधार पर दबाव से खिसककर गुणात्मक सुधार पर आ गया। प्रख्यात अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन के विचारों तक पहुँच बनाते हुए, मानव विकासवाद ने विकास की परिभाषा ''लोगों के विकल्पों को बढ़ाने की प्रक्रिया'' के रूप में की।

इस विचारधारा ने आय को उन मानव विकल्पों व क्षमताओं को बढ़ाने के एक साधन के रूप में लिया, जिनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थे – एक दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन जीने, शिक्षित होने और एक शालीन जीवन-स्तर हेतु आवश्यक संसाधनों तक पहुँच। 1990 में देशों की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा मानव विकास निर्देशिकाओं को अपनाये जाने के बाद, मानव विकास की अवधारणा को व्यापक पहचान मिल गयी। इसने एक विचारमात्र से विकसित हो एक बौद्धिक आन्दोलन का रूप ले लिया। यह इकाई मानव विकास के लिहाज से दक्षिण एशियाई देशों की प्रगति का खाका प्रस्तुत करती है। इकाई का प्रथम पाठांश विकास हेतु इस नए अभिगम के अभिलक्षणों एवं आयामों का परिचय एवं स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है।

2.2 मानव विकास क्या है?

विकास का विषय द्वितीय विश्वयुद्ध से ही सामाजिक विज्ञान में केन्द्रिक रहा है। जैसे ही युद्ध से ध्वस्त हुई अपनी अर्थव्यवस्थाओं को फिर खड़ा करने हेतु राष्ट्रों ने प्रयास आरम्भ किए और जैसे ही एशिया, अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका के उदयीमान देशों ने सदियों के औपनिवेशिक शासन द्वारा पैदा की गई अपनी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं में खींचातानी को दूर करना शुरू किया, विकास सिद्धांतों की बाढ़-सी आ आयी। आमतौर पर इन सिद्धांतों ने विकास को भौतिक कल्याण और भौतिक संसाधनों पर अधिकार के एक संकीर्ण मात्रात्मक अर्थ में देखा। तदनुसार, किसी समाज में उत्पादित समस्त माल और सेवाओं का मूल्य, यानी सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जी.एन.पी.), अथवा उसका कोई वैकल्पिक रूप किसी समुदाय के समग्र कल्याण के एक संकेतक के रूप में प्रयोग होता रहा।

1970 के दशक में समदृष्टि विचारों ने विकास की धारणा को ध्वस्त करना शुरू कर दिया। उदाहरण के लिए, 'बुनियादी आवश्यकता अभिगम' ने अपना ध्यान समाज में ग़रीब व अलाभांवितों की ज़रूरतों की ओर मोड़ लिया। यहाँ तक कि विश्व बैंक ने भी विकास संबंधी अपनी धारणा को विस्तृत किया और समग्र विकास के साथ-साथ ग़रीब एवं अल्प-संसाधन समूहों पर भी ज़ोर देना शुरू किया। विकास संबंधी ऐसी धारणाओं में समाज के सभी सदस्यों की जीवन-दशाओं को सुधारने और उनके कल्याण की इच्छा निहित थी, लेकिन विकास के मूल संकेतक किसी-न-किसी किस्म के आय मानदण्ड ही बने रहे। निष्कर्षत: यह दावा किया गया कि वास्तविक आय में वृद्धि ही मुख्य लक्ष्य है।

इस बात पर अमर्त्य सेन, पॉल स्ट्रीटन एवं महबूब-उल-हक़ जैसे प्रख्यात् अर्थशास्त्रियों में वाद-विवाद हुआ, जो यह मानते थे कि बढ़ी हुई आय मानव-कल्याण में सुधार लाने हेतु एक साधन मात्र होनी चाहिए, न कि अपने-आप में कोई लक्ष्य। उन्होंने तर्क रखा कि आय को मानव विकल्पों को बढ़ाने और मानवीय क्षमताओं (उन कामों की शृंखला जो कि लोग कर सकते हैं अथवा जो वे बन सकते हैं) को मज़बूती प्रदान करने के एक साधन के रूप में लिया जाना चाहिए। आखिरकार, विकास लोगों से उनके कल्याण, उनकी आवश्यकताओं, विकल्पों एवं आशाओं से ही तो संबंधित है। लोगों को ध्यान में रखने वाली विकास विषयक इस नई सोच को ही 'मानव विकास अभिगम' के रूप में जाना जाने लगा है।

इस नई सोच के अनुसार, मानव विकास मानवीय क्षमताओं की निर्माण-प्रक्रिया ही है, जैसे – एक दीर्घ और स्वस्थ जीवन व्यतीत करना, शिक्षा, सूचना एवं ज्ञान प्राप्त करना, जीवनयापन हेतु अवसरों पर अख़्तियार रखना, एक शालीन जीवन हेतु प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच रखना,

सतत विकास कायम रखना, व्यक्तिगत एवं सामाजिक सुरक्षा पाना, समानता हासिल करना और मानवाधिकारों का उपभोग, सामुदायिक जीवन में भागीदारी रखना, जिम्मेदार सरकार एवं उत्तम शासन पाना, आदि।

परम्परागत रूप से, विकास सिद्धांतों का दावा रहा है कि आय में वृद्धि का परिणाम मानव-कल्याण में ही दिखाई देगा। मानव विकास के पक्षधरों ने इस दावे पर विवाद किया। उनका तर्क है कि आर्थिक विकास की गुणवत्ता और वितरण का महत्त्व उतना ही है जितना कि मानव विकल्पों को बढ़ाने के लिए आर्थिक विकास की मात्रा का। आय किसी समाज में असमान रूप से वितरित हो सकती है, ऐसी स्थिति में आय तक सीमित अथवा बिल्कुल नहीं पहुँच रखने वाले लोग बहुत थोड़े-से विकल्पों के साथ ही खत्म हो जाएँगे। अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि लोगों को उपलब्ध विकल्पों की शृंखला किसी समाज अथवा शासकों की राष्ट्रीय प्राथमिकताओं पर निर्भर करती है – बन्दूकें या बटर (मक्खन), अभिजात-वर्गवादी अथवा एक समतावादी विकास, राजनीतिक सत्तावाद अथवा राजनीतिक लोकतंत्र, एक नियंत्रित अर्थव्यवस्था अथवा सहभागितापूर्ण विकास...। प्रतिव्यक्ति आय की तुलना शिक्षा एवं स्वास्थ्य मानक संकेतकों से करते हुए इन अर्थशास्त्रियों ने दर्शाया कि ज़रूरी नहीं कि उच्चतर प्रतिव्यक्ति आय वाले देशों के शिक्षा एवं स्वास्थ्य मानक भी बेहतर ही हों। अमर्त्य सेन ने, उदाहरण के लिए, देखा कि श्रीलंका में औसत आयु-प्रत्याशा 70 वर्ष थी, जबकि ब्राज़ील में यह 64 वर्ष से अधिक नहीं थी, बावजूद इसके कि परवर्ती की प्रतिव्यक्ति आय श्रीलंका की प्रतिव्यक्ति आय से कहीं चार गुना अधिक थी।

मानव विकास अभिगम को आधार मिल गया जब संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) ने 1990 में प्रथम ह्यूमन डिवैलॅपमण्ट रिपोर्ट में मानव विकास संबंधी एक व्यापक अवधारणा प्रस्तुत की। महबूब-उल-हक़ के दिशानिर्देशन में तैयार इस रिपोर्ट में मानव विकास को मानवीय क्षमताओं एवं कार्यकलापों को बढ़ाकर लोगों की विकल्प-शृंखला को विस्तार देने संबंधी एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया था। तदोपरांत वार्षिक मानव विकास रिपोर्टों में मानव विकास प्रतिमान की और अधिक व्याख्या की गई है।

विश्व के सभी देशों की मानव विकास संबंधी रूपरेखा को आगे लाने के लिए यू.एन.डी.पी. ने मानव विकास निर्देशिका (एच.डी.आई.) की अवधारणा को जन्म दिया। यह निर्देशिका मानव विकास के सभी स्तरों पर वांछित तीन अनिवार्य मानवीय विकल्पों की संचयी परिमाप है – दीर्घ जीवन, ज्ञान और शालीन जीवन-स्तर। दीर्घ जीवन एक लम्बी और तंदुरुस्त ज़िंदगी जीने का विकल्प है। यह जीवन-प्रत्याशा (वर्ष) के लिहाज से मापा जाता है। ज्ञान साक्षरता – सूचना प्राप्त करने संबंधी एक विकल्प है। इसको शैक्षिक कुशलता प्रतिशत द्वारा मापा जाता है, जो कि विभिन्न स्तरों पर संयुक्त सकल सदस्यता अनुपात होता है। शालीन जीवन-स्तर जीवन की गुणवत्ता और मानक का उपभोग करने संबंधी एक विकल्प है। यह राष्ट्रीय आय अथवा अमेरिकी डॉलर में क्रय-शक्ति सममूल्यता (पी.पी.पी. यू.एस. $) में प्रतिव्यक्ति आय से मापा जाता है।

किसी देश का दर्ज़ा मानव विकास के इन्हीं तीन मूल आयामों में कुल उपलब्धि से निर्धारित होता है। उक्त निर्देशिका देशों को एक-दूसरे के संबंध में श्रेणीबद्ध करती है ताकि यह जानकारी मिल सके कि कोई देश मानव विकास के मार्ग पर कितना आगे निकल चुका है। इस प्रकार, यह निर्देशिका मानव-विकास स्तरों की ही सूचक है, न कि विकास संबंधी सम्पूर्ण परिमाप की।

2.2.1 मानव विकास के आयाम

मानव विकास प्रतिमान के चार अनिवार्य घटक हैं। पहला है समदृष्टि अर्थात् अवसरों हेतु समान पहुँच। मानव विकास सभी लोगों के विकल्पों को विस्तार प्रदान करने से संबंध रखता है। समदृष्टि के बिना विकास अनेक व्यक्तियों के विकल्पों को रोक देता है। दूसरा है सातत्य अर्थात् निरन्तरता। मानव विकास सभी प्रकार की पूँजियों – भौतिक, मानवीय, वित्तीय एवं पर्यावरणीय – की निरन्तरता पर बल देता है, ताकि भावी पीढ़ियाँ अपने कल्याणार्थ वही अवसर प्राप्त कर

सकें जिसका कि वर्तमान पीढ़ी लाभ उठाती है। तीसरा है उत्पादकता। मानव विकास लोगों में निवेश करने में विश्वास करता है ताकि वे अपनी अधिक-से-अधिक कार्यक्षमता अर्जित कर सकें। इसका अर्थ यह नहीं कि लोगों को महज मानव संसाधनों, बेहतर आर्थिक कुशलता के एक साधन के रूप में देखा जाता है। लोग ही विकास प्रक्रिया के परम लक्ष्य हैं। अंततः, सशक्तीकरण। मानव विकास उन लोगों द्वारा विकास पर ध्यान केन्द्रित करता है, जिन्हें अवश्य ही उन गतिविधियों, घटनाक्रमों एवं प्रक्रियाओं में भागीदार होना चाहिए जो उनके जीवन को आकार प्रदान करती हैं।

समय के साथ, मानव विकास की अवधारणा एक बहुआयामी अभिगम में विकसित हो चुकी है। मानव विकास की अवधारणा धीरे-धीरे सामाजिक विकास के मूल रूप से सभी क्षेत्रों में फैला दी गई है। आय एवं कल्याण के बीच खोये संबंध विषयक मूल केन्द्र में ये बातें जोड़ी गई हैं – सामाजिक ढाँचे एवं उन सेवाओं के प्रावधान हेतु विशेष ध्यान, जो सभी नागरिकों हेतु एक समान आधार पर उपलब्ध करायी जाती हैं; लिंगभेद समानता पर विशेष ज़ोर; और राजनीतिक एवं आर्थिक निर्णयन् में भागीदारी हेतु समान अवसर। परवर्ती को एक शक्तिदायी वैध एवं संस्थागत ढाँचे के साथ-साथ नागरिकों एवं समाज संगठनों के सशक्तीकरण की भी अपेक्षा होती है ताकि वे अधिकारियों तक पहुँचने में सक्षम रहें।

उक्त अवधारणा के कुछ अनुयायियों ने सातत्य पर और अधिक खास ज़ोर दिया, अथवा इसी कल्याण के लाभ उठाने का अवसर भावी पीढ़ियों को मिले। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू. एन.डी.पी.) की अनेक वार्षिक रिपोर्टें सामाजिक विकास के क्षेत्रों तक मानव विकास के विस्तार को दर्शाती हैं। 1995 की मानव विकास रिपोर्ट (एच.डी.आर.) में, उदाहरण के लिए, लिंगभेद समानता पर ध्यान केन्द्रित किया गया था। इस रिपोर्ट में एक लिंगभेद-संबंधित विकास निर्देशिका (जी.डी.आई.) शामिल की गई थी ताकि लिंगभेद संबंधी पूर्वाग्रह को इन तीन केन्द्रिक मानवीय क्षमताओं में सीमाबद्ध किया जा सके। महबूब-उल-हक़ विकास केन्द्र जो दक्षिण एशिया में मानव विकास संबंधी रिपोर्टों (ह्यूमन डिवैलॅपमण्ट इन साउथ एशियन रिपोर्ट्स) को प्रकाशित करता रहा है, ने यह इंगित करने के लिए कि इस क्षेत्र में सरकारें अपने नागरिकों की सेवा के लिहाज से किस प्रकार सफल हो रही हैं एक नई निर्देशिका – द ह्यूमन गवर्नेंस इण्डेक्स, शुरू की।

इस बात पर, बहरहाल, ध्यान दिया जाना चाहिए कि मानव विकास एक अभिगम है, न कि कोई सिद्धांत या उपदेश। वह व्यवहार में लाने के लिए कोई निश्चित कार्य-योजना अथवा सिद्धांत प्रस्तुत नहीं करता। कितनी भागीदारी हो, किस हद तक असमानता हो, सत्ता-असंतुलनों को कम करने हेतु क्या बंदोबस्त किया जाये, कौन-सी मानवीय क्षमताओं को सशक्त किये जाने के लिए कितने सरकारी समर्थन की आवश्यकता है, आदि इसी प्रकार के अन्य विषय हैं जिनके संबंध में कोई स्पष्ट दिशानिर्देश नहीं हैं। वे लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रक्रिया द्वारा ही तय किए जाने चाहिए। मानव विकास अभिगम विचारने और समझने हेतु विषयों व प्राथमिकताओं की एक व्यवस्था प्रदान करता है, न कि लिए जाने वाले निर्णयों की कोई जाँच-सूची।

2.2.2 मानव विकास और नव-उदारवाद

मानव विकास की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए, इसकी तुलना आर्थिक चिन्तन की प्रबल विचारधारा – नव-उदारवाद – से करना उपयोगी होगा। मानव विकास विचारधारा एवं नव-उदारवाद, दोनों की ही सैद्धान्तिक जड़ें उस उदारवादी आर्थिक परम्परा में स्थित हैं जो वैयक्तिक विकल्पों के बुनियादी महत्त्व तथा इन विकल्पों को व्यवहार में लाने हेतु व्यक्तियों को सक्षम बनाने के लिए सुचारू रूप से क्रियाशील बाज़ारों की महत्ता पर ज़ोर देती है। हालाँकि, मानव विकास नव-उदारवाद से कई भाँति भिन्न है।

मानव विकास एवं नव-उदारवाद अभिगमों के बीच कुछ भिन्नताएँ नीचे तालिका में सारांश रूप से बतायी गई हैं। इन दोनों के बीच ठीक-ठीक अर्थ निर्धारित करता भेद यह है कि जहाँ पूर्ववर्ती मानव-जीवन की बेहतर गुणवत्ता एवं संतुष्टि पर अभिलक्षित हैं अर्थात बहु-विषयी है, परवर्ती

अनन्य रूप से आर्थिक कल्याण के आधिक्यीकरण पर अभिलक्षित है अर्थात अर्थ-संबंधी है। जबकि ये दोनों अभिगम कुछ नीतियों के विषय में एक ही आधार रखते प्रतीत होते हैं, यथा शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर, इनके तर्क का आधार भिन्न है। मानव विकास शिक्षा एवं स्वास्थ्य को मानव अधिकार के रूप में देखता है, जबकि नव-उदारवाद उन्हें आर्थिक विकास हेतु लागत के रूप में लेता है। मानव विकास में सारे विश्लेषण और नीति का केन्द्र-बिन्दु जनसमाज होता है, न कि बाज़ार।

	मानव विकास	**नव-उदारवाद**
उद्देश्य	मनुष्य के अवसरों व क्षमताओं का विस्तार	आर्थिक कल्याण का आधिक्यीकरण
विषय-केन्द्र	जन-साधारण	बाज़ार
निर्देशक सिद्धांत	समदृष्टि व न्याय	आर्थिक विकास
बलाधार	लक्ष्य	साधन
रुझान-केन्द्र	ग़रीबी घटाना	आर्थिक कारगरता
अभाव की परिभाषा	बहुआयामी दूषण में आबादी	न्यूनतम आय-सीमा से नीचे आबादी
मुख्य संकेतक	एच.डी.आई., जी.डी.आई., जी.ई.एम. व एच.पी.आई. का प्रतिशत	जी.एन. पी., जी.एन.पी. -वृद्धि व आय-अभाव सीमा से नीचे प्रतिशत

नव-उदारवाद की तुलना में, जो कि एक अल्पतम राज्य का प्रस्ताव रखता है, मानव-विकास विचारधारा राज्य हेतु एक सक्रिय भूमिका के बारे में सोचती है। जैसा कि हमने देखा, मानव-विकास विचारधारा का तर्क है कि आय-वृद्धि एवं मानव-कल्याण के बीच संबंध उन सरकारी नीतियों के माध्यम से सचेत रहते हुए बनाना पड़ता है जो सभी नागरिकों हेतु यथासंभव समदृष्टि रखते हुए सेवाएँ एवं अवसर प्रदान करने पर अभिलक्षित होती हैं। अनेक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में राज्यीय कार्रवाई अनिवार्य होती है : समग्र जन-समाज की मानवीय क्षमताओं को मजबूती प्रदान करने में; आय के उचित वितरण द्वारा अवसरों का एक निष्पक्ष वितरण सुनिश्चित किए जाने में; समदृष्टि और कुशलता के साथ बाज़ार कार्य सुनिश्चित करने हेतु क्रियात्मक नीतियाँ तैयार करने में; और उन स्थानीय संस्थाओं के निर्माण अथवा दृढ़ीकरण को प्रोत्साहन देने में जो गतिविधियों एवं सेवाओं की एक संपूर्ण शृंखला में भागीदारी एवं सशक्तीकरण के लिए अवसर मुहैया कराती हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए इकाई के अंत में संकेत देखें।

निम्नलिखित कथन ध्यानपूर्वक पढ़ें और रिक्त स्थान भरें :

1) परम्परागत रूप से, कल्याण को ..... के समानार्थक के रूप में लिया गया और ..... में मापा गया।

2) मानव विकास के चार अनिवार्य घटक हैं : ....., ..., ...और .....।

3) मानव विकास निर्देशिका मनुष्य के तीन अनिवार्य विकल्पों की संचयी परिमाप है :

i) .....

ii) ..... और

iii) .....

4) मानव विकास के दृष्टिकोण से राज्य की क्या भूमिका है?

.....

.....

.....

.....

2.3 दक्षिण एशिया का आर्थिक आधार

दक्षिण एशिया के सात देशों की भौगोलिक स्थिति एवं जनसंख्या का विस्तार उनकी अर्थव्यवस्थाओं से सीधा सम्बन्ध रखते हैं। इस भूभाग में भारत ही जनसंख्या और क्षेत्रफल के लिहाज से सबसे बड़ा देश है। वर्ष 2000 में इसकी जनसंख्या एक अरब (100 करोड़) का आँकड़ा पार कर चुकी है और विश्व में, जनसंख्या विस्तार में, उसका स्थान चीन के बाद है। इस भूभाग में मालदीव सबसे छोटा देश है, जनसंख्या के साथ-साथ क्षेत्रफल के लिहाज से भी। भूटान और नेपाल चारों ओर ज़मीन से घिरे देश हैं जबकि मालदीव और श्रीलंका चारों ओर पानी से घिरे हैं। भारत और पाकिस्तान ही इस भूभाग में ऐसे देश हैं जहाँ स्थल और जल पर्याप्त रूप से उपलबध है। मात्र 300 वर्ग कि.मी. भूमि और 2,76,000 जनसंख्या (वर्ष 2000 में) वाला मालदीव हिन्द महासागर में एक नन्हा-सा द्वीप है। भूटान, हालाँकि क्षेत्रफल के लिहाज से अपेक्षाकृत बड़ा है (यथा 47,000 वर्ग कि.मी.), दुर्गम भूभाग वाला है। अधिकांश पर्वत-श्रृंखलाएँ बर्फ़ से ढकी रहने के कारण बहुत ही दुर्गम हैं। नेपाल भी हिमालय की पहाड़ियों में स्थित है और इसका इलाका बाह्य रूप से बड़ा प्रतीत होता है परन्तु यह अधिकांशत: पर्वतीय है।

मूल संकेतक						
देश	क्षेत्रफल (1000 वर्ग कि.मी.)	वर्ष 1990 में करोड़	वर्ष 2000 में करोड़	जनसंख्या औसत वार्षिक % वृद्धि (1980-90)	औसत वार्षिक % वृद्धि (1990 -2000)	वर्ष 2000 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. सघनता
बांग्लादेश	144	10.7	13.0	2.2	1.6	997
भूटान	47	140 ('000)	800 ('000)	2.6	2.9	17
भारत	3288	85.0	101.6	2.1	1.8	342
मालदीव		214 ('000)	276 ('000)	3.2	2.6	उपलब्ध नहीं
नेपाल	141	1.9	2.4	2.6	2.4	167
पाकिस्तान	796	11.2	13.8	3.1	2.5	179
श्रीलंका	66	1.7	1.9	1.4	1.3	300
विश्व	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं	60.7	1.7	1.4	47

स्रोत : i) विश्व बैंक "वर्ल्ड डवलॅपमेण्ट रिपोर्ट", प्रासंगिक अंक, वाशिंगटन, डी.सी.

ii) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.), "ह्यूमन डवलॅपमण्ट रिपोर्ट", प्रासंगिक अंक, संयुक्त राष्ट्र, जिनेवा

नोट : भूटान एवं मालदीव के जनसंख्या आँकड़े हज़ार में हैं।

इस भूभाग में रहने वाली विश्व की एक-बटे-पाँच आबादी वाले दक्षिण एशिया में संसार के सबसे अधिक ग़रीब लोग हैं। जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा जीवन-निर्वाह कृषि पर ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है। जिनेवा-स्थित संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने दक्षिण एशिया भूभाग के चार देशों अर्थात भूटान, बांग्लादेश, मालदीव तथा नेपाल, को अल्प-विकसित देशों (एल.डी.सी.) की श्रेणी में रखा है। गत तीन से लेकर पाँच दशकों में, इस भूभाग के देशों ने निम्न औद्योगीकरण एवं व्यापक ग़रीबी से जुड़ी कुछ समस्याओं से निबटने के लिए नियोजित प्रयास किए हैं। परिणामस्वरूप, उनके आर्थिक ढाँचे में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। अपनी-अपनी अर्थव्यवस्थाओं के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय में विभिन्न क्षेत्रों की भागीदारी, में भी परिवर्तन आ रहा है।

इस भूभाग के आर्थिक ढाँचों में परिवर्तन गत दो दशकों, यथा 1980 से 2000, में द्रुतगामी रहा है। पाकिस्तान को छोड़कर कृषि का योगदान द्रुतगति से घटा है और भूटान को छोड़कर सेवाओं का योगदान सभी अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ा है जबकि औद्योगिक क्षेत्र सुस्त रहा है। यद्यपि सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में कृषि का योगदान 1980 में 40 प्रतिशत से 2001 में 25 प्रतिशत तक गिर गया, कृषि अब भी दक्षिण एशिया में आधे से अधिक नियोजित लोगों को रोज़गार प्रदान करती है।

दूसरी ओर सेवा-क्षेत्र, जी.डी.पी. में एक महत्त्वपूर्ण अंशदायक के रूप में उभरा है। श्रमिक बल के 22 प्रतिशत से कुछ अधिक को रोज़गार प्रदान कर जी.डी.पी. में सेवा-क्षेत्र का योगदान बढ़ गया है। बांग्लादेश, पाकिस्तान व श्रीलंका में सेवा-क्षेत्र जी.डी.पी. के पचास प्रतिशत से भी अधिक का योगदान कर रहा है। यह उछाल खासकर 1990 के दशक में आया जब इन देशों ने अपनी अर्थव्यवस्थाएँ निजी एवं विदेशी निवेशकों के लिए खोल दीं।

जी.डी.पी. में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान गत दो दशकों के दौरान 25 प्रतिशत पर न्यूनाधिक स्थिर रहा है। विनिर्माण एवं उद्योग क्षेत्र में गिरावट या मंदी बुनियादी ढाँचे में अन्तर्निहित कमज़ोरी को दर्शाती है। यह एक चिन्तनीय विषय है क्योंकि इस प्रकार की गिरावट न सिर्फ़ इस क्षेत्र की रोज़गार-जनन क्षमता को क्षीण कर देती है बल्कि अन्ततोगत्वा सतत विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। विडम्बना ही है कि सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) एवं सेवाओं की गरम बाज़ारी के युग में भी विकसित पश्चिम एवं पूर्वी देश विनिर्माण एवं उद्योग क्षेत्र में उच्च विकास-दर कायम रखे हैं। उदाहरण के लिए, गत बीस वर्षों में अमेरिकी विनिर्माण योगदान उसकी राष्ट्रीय आय में लगभग 25 से 30 प्रतिशत रहा जिसने अपेक्षाकृत लम्बे समय तक विकास को बढ़ावा देने हेतु उसकी अर्थव्यवस्था को यथेष्ट शक्ति प्रदान की। विनिर्माण एवं उद्योग क्षेत्र में उच्च विकास-दर को अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों को विस्तार प्रदान करने में एक अनिवार्य तत्त्व के रूप में देखा जाता है। दक्षिण एशिया में विनिर्माण एवं उद्योग क्षेत्र में गति-वेग के अभाव ने रोज़गार पैदा करने में गिरावट ला दी है और अन्ततः ग़रीबी के बढ़ते दबाव की ओर प्रवृत्त किया है।

2.4 दक्षिण एशिया में मानव विकास

वर्ष 1990 में जबसे संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम में प्रथम मानव विकास रिपोर्ट प्रकाशित की है, मानव विकास अभिगम एक बड़ी संख्या में विभिन्न आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में लागू और श्रम-सम्पादित किया गया है। पिछले दशक के दौरान, 135 से अधिक देशों ने विभिन्न राष्ट्रीय प्रसंगों में मानव विकास के पहलुओं का विश्लेषण करते हुए लगभग 300 रिपोर्टें तैयार की हैं। दक्षिण एशिया, अफ्रीका, मध्य अमेरिका एवं प्राान्त द्वीपों के लिए क्षेत्रीय रिपोर्टें भी तैयार की गई हैं। दक्षिण-एशिया क्षेत्र के लिए, 1995 में स्थापित महबूब-उल-हक़ विकास केन्द्र दक्षिण एशिया में मानव विकास संबंधी वार्षिक रिपोर्टें प्रकाशित करता रहा है। आगे दिया गया विश्लेषण खासकर इन्हीं रिपोर्टों से लिया गया है।

जैसा कि हमने देखा, मानव विकास निर्देशिका (एच.डी.आई.) राष्ट्रों की प्रगति की एक संग्रथित विषय-सूची है जो आर्थिक एवं सामाजिक विकास दोनों को सम्मिश्रित करती है। जब हम परम्परागत आर्थिक विकास अभिगम की भाँति आय को मानदण्ड मानकर देखते हैं तो यह लगता है कि विकास प्रक्रिया दक्षिण एशिया एवं अन्य विकासशील देशों में विफल रही है, क्योंकि ये देश अभी निचले पायदान पर ही हैं। तथापि, जब हम मानव विकास को वास्तविक (सामाजिक) सूचकों को शामिल करके इन देशों को मूल्यांकन करते हैं, तब हम पाते हैं कि इनमें से अधिकांश देशों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। महबूब-उल-हक़ की गणना के अनुसार, औसत जीवन-प्रत्याशा 16 वर्ष बढ़ गई है, साक्षरता में 40 प्रतिशत और प्रतिव्यक्ति पोषण-स्तर में 20 प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि हुई है। वस्तुत:, विकासशील देशों ने गत 30 वर्षों में इस प्रकार की वास्तविक मानव प्रगति हासिल कर ली है जो कि औद्योगीकृत देशों ने सम्पादित करने में लगभग एक सदी लगाई। जबकि औद्योगीकृत एवं विकासशील देशों के बीच फ़ासला, आमदनी के लिहाज से, काफ़ी बड़ा है (विकासशील देशों की आय औद्योगीकृत देशों का मात्र 6 प्रतिशत है), इंसानी फ़ासला घटता रहा है। विकासशील देशों में औसत जीवन-प्रत्याशा औद्योगीकृत देशों के औसत का 80 प्रतिशत है, प्रौढ़-साक्षरता 66 प्रतिशत और पोषण 85 प्रतिशत है।

ये देश मानव विकास में किस प्रकार सफल रहते हैं? मानव प्रगति के लिहाज से अन्य विकासशील क्षेत्रों के मुकाबले दक्षिण एशिया कहाँ खड़ा है? इस पाठांश में हम तीन अतिमहत्त्वपूर्ण मानव विकल्पों पर ध्यान देते हुए मानव प्रगति के इन तथा अन्य आयामों पर सूक्ष्म दृष्टि डालने का प्रयास करेंगे – दीर्घ जीवन, ज्ञान और जीवन-स्तर।

2.4.1 ज्ञान : दक्षिण एशिया में शिक्षा

शिक्षा को अब व्यक्ति की उपलब्धि नहीं माना जाता बल्कि उसके अस्तित्व का आधार माना जाता है। इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि शिक्षा अनेक सामाजिक हितों की ओर प्रवत्त करती है, जैसे कि आरोग्य-पालन मानकों में सुधार, शिशु एवं बाल मृत्युदर में कमी, जनसंख्या वृद्धि में गिरावट, आदि। शिक्षा, इसी कारण, मानव विकास के समग्र ढाँचे में एक अहम स्थान रखती है और ज्ञान के एक अधिकार-प्राप्त प्रतिनिधि के रूप में प्रयोग की जाती है।

शिक्षा इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि वह आर्थिक विकास में सीधे योगदान देती है। द्रुतगति से भूमण्डलीकृत होते विश्व के वर्तमान प्रसंग में शिक्षा (ज्ञान और कौशल) विश्व-बाज़ारों में प्रतिस्पर्धा के लिए भी आवश्यक है। इस संदर्भ में दक्षिण एशिया अंधकारमय तस्वीर प्रस्तुत करता है। विश्व के लगभग आधे प्रौढ़ निरक्षरों वाला दक्षिण एशिया ही विश्व में सर्वाधिक अशिक्षित भूभाग है।

गत तीन दशकों में प्रौढ़-साक्षरता दर 1970 में 32 प्रतिशत से 2001 में 54 प्रतिशत तक बढ़ी है। उक्त क्षेत्र ने इस अवधि में अपने नागरिकों को शिक्षा प्रदान करने में उल्लेखनीय प्रगति की है और सकल भर्ती दरों के साथ-साथ माध्यमिक स्तरों पर भर्तियों ने भी एक तेज़ रफ़्तार तरक्की दर्ज की है।

इसी अवधि में इस क्षेत्र में निरक्षरों की सही-सही संख्या 36-6 करोड़ से बढ़कर 60 करोड़ से ऊपर चली गई है जो यह दर्शाता है कि साक्षरता दर जनसंख्या वृद्धि दर के संग-संग नहीं बढ़ी। दक्षिण एशिया में अब भी विश्व की सबसे बड़ी अशिक्षित आबादी है। इसके अतिरिक्त, इस भूभाग के देशों के बीच विभिन्नताएँ हैं, मालदीव एवं श्रीलंका ने हमेशा अच्छा प्रदर्शन किया है, प्रौढ़ साक्षरता दरों को 90 प्रतिशत से काफ़ी ऊपर दर्ज करके, नेपाल व बांग्लादेश 40 प्रतिशत वाली निम्न साक्षरता दरों के साथ पिछड़े हुए हैं।

इस भूभाग में नारी-शिक्षा की दिशा में व्यापक उदासीनता मानव विकास में सबसे बड़ी खामियों में से एक है। साठ प्रतिशत से भी अधिक अशिक्षित नारी-जनसंख्या वाले दक्षिण एशिया में, अरब राज्यों को मिलाकर प्रौढ़ स्त्रियों की संख्या सबसे अधिक है। 1990 के दशक में इस वैषम्य को

दूर करने के लिए किए गए प्रयासों से भी लड़कियों और लड़कों के बीच शैक्षिक भेद कम नहीं हुए। प्राथमिक स्तर पर लड़कियों की भर्ती में सुधार आया है, लेकिन शिक्षा के माध्यमिक स्तरों पर उनके स्कूल छोड़ने की दर बहुत ऊँची बनी ही है। यह दर्शाता है कि प्राथमिक शिक्षा पाने के बाद अधिकतर लड़कियों की (खासकर ग्रामीण अथवा ग़रीब परिवारों में जन्मीं) या तो शादी हो जाती है या फिर वे बाल-श्रमिक के रूप में काम करती हैं जो उन्हें शिक्षा छोड़ देने पर मज़बूर करता है। केवल श्रीलंका और मालदीव के लिए बालिका माध्यमिक विद्यालय भर्ती-दर कुछ-कुछ सम्मानजनक है, पर सौ प्रतिशत वो भी नहीं है। माध्यमिक स्तर पर लड़कियों द्वारा स्कूल छोड़े जाने की दर एक महत्त्वपूर्ण रूप से मानव-विकास प्रक्रिया को ख़तरे में डालती है। ग़रीबी से सम्बद्ध अधिकांश समस्याएँ नारी-निरक्षरता से सीधे जुड़ी हैं।

मानव संसाधन विकास (HRD) रिपोर्टें दर्शाती हैं कि विश्व के अन्य विकासशील क्षेत्रों के मुकाबले दक्षिण एशिया में शिक्षा में सरकारी लागत का स्तर निम्न है और मुश्किल से ही बढ़ती जनसंख्या के माफ़िक रहा है। 1990 के दशक में भारत, श्रीलंका एवं नेपाल में शिक्षा पर सरकारी व्यय सकल घरेलू उत्पाद के तीन प्रतिशत से कुछ ही ऊपर रहा, जबकि बांग्लादेश में यह दो प्रतिशत और पाकिस्तान में दो प्रतिशत से भी कम रहा।

तमाम दक्षिण-एशियाई देशों में शिक्षा पर सरकारी खर्च का विश्लेषण दर्शाता है कि पाकिस्तान ने सबसे अधिक शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर खर्च किया, बांग्लादेश ने माध्यमिक शिक्षा पर और नेपाल ने तृतीय स्तर पर। मई 2003 में, 'सबके लिए शिक्षा' विषम पर दक्षिण एशिया के एक मंत्रीय सम्मेलन में इस भूभाग के देशों ने आबंटन को बढ़ाकर अपने सकल घरेलू उत्पाद के चार प्रतिशत तक करने का वचन दिया है।

2.4.2 दीर्घ जीवन : स्वास्थ्य, आहार और स्वास्थ्य-रक्षा

मानव जीवन ही सर्वाधिक मूल्यवान है और दीर्घ जीवन सभी मानवीय उपलब्धियों में अमूल्य है। यह साधन के साथ-साथ साध्य भी है। दीर्घ जीवन स्वच्छ पेयजल पर्याप्त आहार, उत्तम स्वास्थ्य एवं व्यक्तिगत सुरक्षा के साथ निकट से जुड़ा है। मानव विकास निर्देशिका (एच.डी. आई.) की गणना में, जन्म के समय जीवन-प्रत्याशा को इसीलिए दीर्घ जीवन हेतु एक प्रतिनिधि के रूप में प्रयोग किया जाता है।

दक्षिण एशिया में जीवन-प्रत्याशा निम्न है, इससे ऊपर सिर्फ़ उप-सहाराई अफ्रीका ही है। तथापि, जन्म के समय जीवन-प्रत्याशा में क्रमिक बढ़ोत्तरी हुई है। दक्षिण एशियाई लोगों से उम्मीद की जाती है कि थोड़ी-सी अधिक जिंदगी जीयेंगे क्योंकि इस भूभाग के देशों जीवन-प्रत्याशा श्रीलंका में 72 वर्ष से लेकर नेपाल में 59 वर्ष तक पायी जाती है। जबकि इसके लिए कारण विभिन्न हैं, इस क्षेत्र के स्वास्थ्य सिद्धांतों में आम सुधार एक प्रमुख कारक है। मानव विकास रिपोर्ट (एच.डी.आर.) द्वारा एकत्रित आँकड़े दर्शाते हैं कि यद्यपि स्वास्थ्य सेवाओं पर सरकारी खर्च में कोई वृद्धि नहीं हुई (स्वास्थ्य पर जी.डी.पी. का मात्र एक प्रतिशत खर्च किए जाने के साथ), आबादी के 75 प्रतिशत से अधिक हेतु स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ थीं। स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर सुलभता बाल प्रतिरक्षण कार्यक्रमों के विस्तार और प्रचार में उल्लेखनीय वृद्धि में प्रकट हुई। जबकि 1980 के दशक में इस भूभाग में आबादी की महज एक छोटी-सी प्रतिशतता ही टीकाकरण का लाभ उठा सकी, क्षेत्र में सभी देशों ने तपेदिक और काली खाँसी जैसी भयानक बीमारियों के खिलाफ़ प्रतिरक्षण कार्यक्रमों में उल्लेखनीय प्रगति की।

स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार शिशु-मृत्यु दर में कमी में भी दिखाई देता है – 1990 में प्रति हज़ार मौतों से वर्ष 2000 में 67 शिशु-मृत्यु। पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में भी मृत्यु दर प्रति हज़ार 147 से गिरकर 95 मौतों पर आयी हैं। तथापि, बच्चा जनने के समय माँओं की मौतें इस क्षेत्र में काफ़ी अधिक हैं। इसके लिए मुख्य कारण हैं – नारी-साक्षरता के निम्न स्तर, महिलाओं की कम विवाह-योग्य आयु, लड़का पैदा होने को तरजीह और ग़रीबी। बच्चा जनने के समय पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं की अनुपलब्धता, खासकर दूरवर्ती ग्रामीण इलाकों में, भी

माताओं की मृत्यु की गंभीरता को बढ़ाती है। अधिकांश जन्म (80 प्रतिशत से अधिक) कुशल स्वास्थ्य-कर्मियों की सहायता के बग़ैर होते हैं। केवल श्रीलंका और मालदीव में ही प्रसवकाल के लिए प्रशिक्षित स्वास्थ्य-कर्मियों की पर्याप्त संख्या मौजूद है। प्रसव के समय स्त्रियों तथा पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की उच्च मृत्यु-दर कुपोषण, प्रसव के पहले और बाद में अस्वस्थकर लड़कियों की उपेक्षा, आदि से ताल्लुक रखती हैं।

भारत, पाकिस्तान एवं श्रीलंका में प्रति व्यक्ति दैनिक कैलॉरी खपत संतोषजनक है, परन्तु शेष देशों में यह मानदण्ड से नीचे है। कुल मिलाकर, इस क्षेत्र में 2379 की दैनिक कैलॉरी आपूर्ति 2663 पर विकासशील देशों हेतु औसत से कम है। कैलॉरी की खपत में कमी लोगों की कार्यक्षमता, दैहिक एवं मानसिक दोनों, पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। पूरे भूभाग में आबादी का एक खासा हिस्सा अल्प-पोषित है, यानी वे या तो अपर्याप्त भोजन पर जीवित रहते हैं अथवा (खाये जाने वाले) भोजन की गुणवत्ता मानक से नीचे होती है। अल्प-पोषण और कुपोषण लोगों की कार्योपयोगिता में बाधा डालते हैं। निम्न कार्योपयोगिता निम्न उत्पादकता एवं निम्न आय से जुड़ी है जो ग़रीबी के दुष्चक्र को तीव्र करती है।

स्वास्थ्य से जुड़ा एक अन्य क्षेत्र है जनता के लिए सुरक्षित (पेय) जल एवं मलव्ययन की सुलभता। दक्षिण एशिया के अधिकतर ग्रामीण इलाकों में रहने वाली आबादी के लगभग 12 प्रतिशत को सुरक्षित जल सुलभ नहीं है। कई बार सुरक्षित जल की अनुपलब्धता जल-जनित बीमारियाँ फैलाती है और महामारी, खासकर बरसात के दिनों में, का कारण बनती है।

ग्रामीण जनता के लिए पर्याप्त मल-व्ययन सुविधा की उपलब्धता दशा सुरक्षित जल के मुकाबले बदतर है। आबादी के मात्र 37 प्रतिशत को ही मल-व्ययन सुविधाएँ सुलभ हैं। भारत में यह मात्र 15 प्रतिशत है। केवल श्रीलंका एवं भूटान में ही अधिकांश ग्रामीण के लिए पर्याप्त मल-व्ययन सुविधाएँ उपलब्ध हैं। पर्याप्त मल-व्ययन सुविधाओं का अभाव लोगों के स्वास्थ्य पर ख़तरा उत्पन्न करता है और महिलाएँ सबसे बुरी तरह पीड़ित होती हैं।

2.4.3 शालीन जीवन-स्तर

लोगों को उपलब्ध विकल्पों को तय करने में आय एक महत्त्वपूर्ण मानदण्ड है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य समेत भूटान को संसाधनों पर अधिकार पाने के लिए पर्याप्त आय ज़रूरी है। यह न सिर्फ़ लोगों को अधिक उत्पादनशील बनाती है, बल्कि उन्हें अपना जीवन सुधारने के लिए अवसरों की सुलभता भी प्रदान करती है। लोगों के अधिकार में संसाधनों एवं उन्हें उपलब्ध विकल्पों को रखे जाने के एक प्राय: ठीक मानदण्ड के रूप में क्रयशक्ति-समंजित प्रतिव्यक्ति जी.डी.पी. इसी कारण प्रयोग की जाती है।

इस संदर्भ में, दक्षिण एशिया में लोगों के पास सीमित विकल्प हैं क्योंकि लोगों की क्रय-शक्ति के आधार पर आकलित प्रतिव्यक्ति जी.डी.पी. निम्न है : वर्ष 2000 में यह मात्र 2238 डॉलर थी, यानी 3783 डॉलर पर विकासशील देशों हेतु औसत के मुकाबले काफ़ी कम। एकमात्र भूभाग जो दक्षिण एशिया से ज़्यादा ग़रीब है, वो है उप-सहाराई अफ्रीका। तथापि, दक्षिण एशिया क्षेत्र के अन्दर आय-स्तरों में विभिन्नताएँ व्याप्त हैं। नई सहस्राब्दि के आरम्भ में मालदीव एवं श्रीलंका के आय-स्तर ऊँचे थे ($4485 व $3530) और नेपाल, भूटान व पाकिस्तान की आमदनियाँ निम्नतम (क्रमश: $1327, $1412 व $1928)। महत्त्वपूर्ण रूप से, 1990 के दशकारंभ में पाकिस्तान के मुकाबले भारत के आय-स्तर कम थे। परन्तु दशक के अंत तक, एक उन्नत और सतत आर्थिक विकास के चलते भारत के वास्तविक जी.डी.पी. प्रतिव्यक्ति-स्तर ($2358) पाकिस्तान के जी.डी.पी. प्रतिव्यक्ति-स्तर ($1928) से ऊपर चले गए।

जैसा कि पहले कहा गया, जी.डी.पी. प्रतिव्यक्ति लोगों को उपलब्ध विकल्पों का एक रफ़ पैमाना पेश करता है। समान रूप से ही यह भी महत्त्वपूर्ण है कि आय किस प्रकार वितरित है। यहाँ, इस भूभाग का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है, 1990 के दशक में अमीर और ग़रीब के बीच चौड़ी होती

खाई की वज़ह से। वर्ष 2002 के लिए दक्षिण एशिया में मानव विकास ने ग़ौर किया कि "दक्षिण एशिया के औसतन सभी देशों की आबादी के सम्पन्नतम 20 प्रतिशत लोगों का आय में लगभग 41 से 46 तक प्रतिशत हिस्सा था, जबकि आबादी के दरिद्रतम 20 प्रतिशत लोगों का आय में हिस्सा स्थूलत: आठ से दस प्रतिशत ही था।"

दक्षिण एशिया में आय के लिहाज से स्त्री-पुरुष में काफ़ी विषमता देखी जाती है। यहाँ के सरकारी आँकड़े महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को पुरुष की आर्थिक भागीदारी के अंश मात्र रूप में ही दर्शाते हैं। चूँकि दक्षिण एशियाई महिलाओं का बड़ा हिस्सा अनियमित क्षेत्र में काम करता है और अवैतनिक परिवार सहायकों के रूप में, राष्ट्रीय लेखांकन प्रणालियों में उनका काम उपेक्षित ही गिना जाता है। 874 अमेरिका डॉलर पर दक्षिण एशियाई महिलाओं की वास्तविक जी.डी.पी. प्रति व्यक्ति विश्व में किसी भी अन्य क्षेत्र, उप-सहाराई अफ्रीका समेत, के मुकाबले कम ही है।

2.4.4 लिंगभेद विवेचना

महिलाओं से, लिंगभेद के आधार पर, विश्व के लगभग सभी समाजों में हमेशा भेदभाव किया जाता रहा है। परन्तु, दक्षिण एशिया में महिलाओं के खिलाफ़ होने वाला पक्षपात अधिकांश दूसरे विकासशील देशों में रहने वाली महिलाओं के मुकाबले कहीं ज़्यादा बदतर हालत में है और पुरुष-प्रधान समाज व्यवस्था में गहरे घुसकर कायम है। जैसा कि हमने गत पाठांशों में देखा, महिलाओं को उनके बालकाल से ही शिक्षा, स्वास्थ्य-रक्षा, पोषण, और यहाँ तक कि जीवकोपार्जन संबंधी मौलिक आर्थिक अधिकार हेतु समान पहुँच से भी वंचित रखा जाता है।

वर्ष 2000 की दक्षिण एशिया में मानव विकास संबंधी रिपोर्ट के अनुसार, दक्षिण एशियाई महिलाओं के खिलाफ़ भेदभाव जन्म, अथवा उससे भी पहले, से ही शुरू हो जाता है। मादा भ्रूण-हत्या व शिशु-वध, स्वास्थ्य की उपेक्षा, भारी कार्य-बोझों के साथ-साथ लिंगभेद पूर्वाग्रहग्रसित खुराक आदि प्रथाएँ – सभी बेटा-पसंद एवं पितृसत्तात्मक प्राधारों की अभिव्यक्तियाँ है जो इस क्षेत्र भर में व्याप्त हैं। दक्षिण एशिया का लिंग-अनुपात विश्व भर के सर्वाधिक विकृत लिंग-अनुपात में से एक है – यहाँ हर 1000 पुरुषों के लिए मात्र 940 स्त्रियाँ हैं। (विश्व-औसत 1060 स्त्रियाँ प्रति 1000 पुरुष है)।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए इकाई के अंत में संकेत देखें।

1) दक्षिण एशिया में नारी-शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण करें।

.....

.....

.....

.....

2) दक्षिण एशिया में स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता की वर्तमान दशा कैसी है?

.....

.....

.....

.....

2.5 उत्तम शासन का प्रश्न

जैसा कि हमने देखा, मानवीय विकल्पों का विवर्धन महज़ आर्थिक विकास पर नहीं बल्कि, अधिक महत्त्वपूर्ण रूप से, उस विकास की गुणवत्ता एवं वितरण पर निर्भर करता है। शासन-शक्तियों को सभी नागरिकों को यथासंभव समान रूप से सेवाएँ एवं अवसर प्रदान करने पर अभिलक्षित सरकारी नीतियों के माध्यम से आय-वृद्धि एवं मानव-कल्याण के बीच संबंध कायम करना पड़ता है। इस प्रकार, उत्तम शासन के साथ ही साथ होने वाला आर्थिक विकास, यथा जन-कल्याण हेतु सरकारी नीतियाँ एवं उनका कार्यान्वयन, सतत मानव विकास हेतु निर्णायक होता है।

सतत मानव विकास में जो निर्णायक भूमिका उत्तम शासन निभा सकता है वह दक्षिण एशियाई देशों के अनुभव से बिल्कुल स्पष्ट है। आय के स्तरों के बावजूद श्रीलंका ने व्यापक कल्याण पर अभिलक्षित सतर्क सरकारी नीतियों द्वारा मानव विकास का एक सम्मानजनक आदर्श स्थापित किया। दूसरी ओर पाकिस्तान, द्रुत आर्थिक विकास के बावजूद भी निम्न सामाजिक खर्चों एवं असमान आय-वितरण की वजह से मानव विकास में पिछड़ गया।

मानव विकास के परिमापन के दो महत्त्वपूर्ण निर्देशक – प्रौढ़ साक्षरता दर और जीवन-प्रत्याशा – शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं को दी गई प्राथमिकता पर निर्भर करते हैं। शिक्षा एवं स्वास्थ्य दोनों अर्ध-सरकारी कल्याण कार्य हैं जिनको हर एक देश की अपनी सरकार द्वारा आर्थिक सहायता देकर समर्थित किया जाता है। इस परिदान का प्रावधान शिक्षा एवं स्वास्थ्य के विकास को प्राथमिकता दिए जाने के साथ-साथ आर्थिक-विकास स्तर (यथा, इन दोनों आर्थिक-सहायताप्राप्त कल्याण-कार्यों को वित्त प्रदान करने की क्षमता) पर भी निर्भर करता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, आदि जैसे सरकारी कार्यक्रमों पर राष्ट्रीय आय को आबंटित करने में दक्षिण एशियाई सरकारों का रिकार्ड अनियमित ही रहा है। इस भूभाग में सरकारों की आयात-प्रतिस्थापन रणनीतियाँ थीं और उत्पादन एवं व्यापार में अत्यधिक तत्परता दिखाई थी। उन्होंने अपनी अर्थव्यवस्थाओं को कुछ ज़्यादा ही नियमित कर दिया था जो उन्हें अकुशलता और भ्रष्टाचार की ओर ले गया। 1990 के दशक में दक्षिण एशियाई देश उदारीकरण एवं निजीकरण अपनाकर निर्यातोन्मुखी विकास रणनीति की ओर चले गए। सार्वजनिक क्षेत्रों से उपलब्ध विनिवेश ने, तथापि, सामाजिक क्षेत्र पर अधिक ज़ोर दिए जाने की ओर प्रवृत्त नहीं किया है। इसके अतिरिक्त, जैसा कि महबूब-उल-हक़ पाते हैं, विद्यमान सामाजिक क्षेत्रों तक में, "अकुशलता एवं असमानताओं के बहुत सारे उदाहरण मौजूद हैं : सभी के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा की बजाय कुछ विशेषाधिकारप्राप्त लोगों के लिए नगरीय अस्पताल; विश्वविद्यालयों के लिए अत्यधिक परिदान जबकि बुनियादी शिक्षा लक्ष्यों को बजट की लाइन में लगकर अपनी बारी का इंतजार करना पड़ता है; जन-साधारण के लिए जगह-जगह नल लगाने की बजाए उच्च-आय वर्गों के लिए घर-घर पानी पहुँचाना ... यह विडम्बना ही है कि अनेक देशों में सम्पन्न लोग बहुत सस्ते में अच्छी सेवाएँ प्राप्त करते हैं जबकि ग़रीब लोग ऊँचे दाम देकर भी पर्याप्त सेवाएँ नहीं पाते।"

अदक्ष शासन तथा संसाधनों का आबण्टन किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए, एक विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए अपेक्षाकृत अधिक गंभीर प्रभाव रखते हैं। घरेलू संसाधनों की कमी से बचने के लिए दक्षिण एशिया के लगभग सभी देशों ने बाहर से ऋण प्राप्त किए हैं। ब्याज मिलाकर ऋण-राशि का पुनर्भुगतान ही हर वर्ष इन देशों के लिए एक बड़ा बोझ रहता है। जैसा कि नीचे दी गई तालिका दर्शाती है, पाकिस्तान, श्रीलंका एवं मालदीव भारी कर्ज तले दबे देश हैं और उनका ऋण-सेवा प्रभार उनकी काफ़ी राष्ट्रीय आय खा जाता है। जन-कल्याण एवं सामाजिक विकास हेतु कुछ ही पूँजी कोष रह जाते हैं।

राजकीय व्यय में सरकारों की प्राथमिकताएँ

	शिक्षा पर सरकारी खर्च (जी.एन.पी. के % रूप में)		स्वास्थ्य पर सरकारी खर्च (जी.एन.पी. के % रूप में)		सामरिक व्यय (जी.एन.पी. के % रूप में)		कुल ऋण (जी.डी.पी. के % रूप में)	
	1985-87	1995-97	1990	2000	1990	2000	1990	2000
बांग्लादेश	1-4	2-5	0-7	1-5	1-0	1-3	2-5	1-7
भूटान	3-7	5-2	1-7	3-7	NA	NA	1-8	1-4
भारत	3-2	4-1	0-9	0-9	2-7	2-4	2-6	2-2
मालदीव	5-2	3-9	3-6	6-3	NA	NA	4-4	3-6
नेपाल	2-2	3-7	0-8	1-6	0-9	0-9	1-9	1-8
पाकिस्तान	3-1	1-8	1-1	0-9	5-8	4-5	4-8	4-6
श्रीलंका	2-7	3-1	1-5	1-8	2-1	4-5	4-8	4-5

स्रोत : ह्यूमन डवलॅपमण्ट इन साउथ एशिया 2003] पूर्ववर्ती वर्ष.

दक्षिण एशिया में सरकारी खर्चों का आबण्टन शासन-शक्तियों में परिवर्तन अथवा आन्तरिक सुरक्षा, युद्ध, आदि जैसी असामान्य परिथितियाँ पैदा होने से बीच में ही रुक जाता है। भूटान और मालदीव को छोड़कर, शेष दक्षिण एशियाई देशों को आतंकवादी गतिविधियों, धार्मिक कट्टरता, सीमा-पार के आतंकवाद, आदि से अपनी आन्तरिक शान्ति एवं सुरक्षा को ख़तरा महसूस होता है। इसका परिणाम हुआ है सेना पर अधिक खर्च। 1990 के दशक में श्रीलंका का सैन्य बज़ट बढ़कर राष्ट्रीय आय का 4-5 प्रतिशत हो गया है। जैसा कि उपर्युक्त तालिका दर्शाती है, भारत और पाकिस्तान मसला कोई भिन्न नहीं है। 1999 में दोनों के बीच हल्के विवाद और उन्नत सैनिक और नाभिकीय साज़ो-सामान जुटाने की होड़ ने उनके सामरिक व्ययों में एक तेज उछाल की ओर प्रवृत्त किया है। सेना के लिए ये ऊँचे-ऊँचे आबण्टन जन-कल्याण विषयक खर्च को निगल जाते हैं। उदाहरण के लिए, 1990 के दशक में पाकिस्तान में शिक्षा एवं स्वास्थ्य विषयक सरकारी खर्च घटा है। पाकिस्तान का सामरिक व्यय इन दिनों शिक्षा एवं स्वास्थ्य विषयक संयुक्त व्यय से अधिक है। पाकिस्तान जैसी सीमित अर्थव्यवस्था के लिए अनुत्पादक मद (यानी, सेना) पर एक बड़ा व्यय किसी भी राष्ट्र पर बोझ है और जल-कल्याण एवं समाज-कल्याण के अभाव जैसा ही है।

अंशत: आयात-प्रतिस्थापन विकास रणनीति के परिणामस्वरूप और अंशत: सुरक्षा मामलों, यानी सुरक्षा पर आंतरिक और बाहरी ख़तरों, पर ध्यानमग्नता के कारण दक्षिण एशिया में उच्च रूप से केन्द्रीकृत राज्य प्राधार विद्यमान हैं। परिणामस्वरूप, इन स्थानीय संस्थाओं में कमी आयी है जो गतिविधियों एवं सेवाओं की एक सम्पूर्ण श्रृंखला में भाग लेने के लिए अवसर प्रदान करने में निर्णायक होती हैं। इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र के लगभग सभी देशों में स्थानीय संस्थाएँ उच्च रूप से राजनीतिकृत हैं और प्राय: उन पर समाज के सम्पन्न वर्गों का ही आधिपत्य होता है। तदनुसार, ये संस्थाएँ सामाजिक स्तरीकरण की पारम्परिक व्यवस्था को कायम रखने में सहायक बन जाती हैं। आर्थिक उदारीकरण एवं निजीकरण कार्यक्रम इन स्थानीय संस्थाओं पर कोई सकारात्मक प्रभाव डाल पाएँगे, यह अभी तक स्पष्ट नहीं है।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए इकाई के अंत में संकेत देखें।

1) किसी देश में मानव विकास में सुधार लाने के लिए सरकारों की क्या भूमिका होती है? उदाहरण प्रस्तुत करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2.6 सारांश

हमने देखा कि मानव विकास की अवधारणा उन परम्परागत विकास सिद्धांतों के एक विकल्प के रूप में सामने आयी जो आर्थिक विकास के मामले में संकीर्णमना थे। आम जनता, उसकी भलाई, उसकी ज़रूरतों, पसंदों और उम्मीदों पर ध्यान खींचते हुए मानव विकास तरक्क़ी की तरफ जाता एक ऐसा रास्ता है जिसमें इंसान को ही अहम् मानकर चला जाता है। इस कसौटी ने, जिसे पिछले दशक या उसके आसपास ही पूरी तौर से मंजूरी मिली, तरक्की के मायनों को आर्थिक विकास से परे ले जाकर लोगों के बीच फैलाया। आज विकास को एक गणनात्मक परिवर्तन के साथ-साथ गुणात्मक विकास की प्रक्रिया के रूप में भी देखा जाता है।

किसी देश में मानव विकास को परखने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषणाहार एवं स्वच्छता, वास्तविक जी.डी.पी. वृद्धि जैसे कारकों को विचारार्थ लिया जाता है। जैसा कि हमने देखा, दक्षिण एशिया में, श्रीलंका को छोड़कर बाक़ी देशों में, मानव विकास निराशाजनक है, दक्षिण एशिया विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में एक बना ही हुआ है। यह भूभाग प्रधानत: कृषिक है जहाँ 70 फ़ीसदी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। ग्रामीण लोग या तो सिर्फ़ रोटी-कपड़ा लायक खेती पर टिके हैं या फिर यों ही किसी नौकरी-चाकरी पर। इस क्षेत्र की 35 फ़ीसदी से ऊपर आबादी ग़रीबी की हालत में रह रही है। हर तरफ हावी प्रौढ़ निरक्षता, प्राथमिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का अभाव, जिंदगी के हर पहलू में जनाना आबादी को ग़ैर मानकर चलना, घूसखोर या नाक़ाबिल सरकारें मानव विकास से मताल्लिक इस घटिया कामयाबी की कुछ वजहें हैं। इंसानी तरक्क़ी के रास्ते पर तेज़ कदम बढ़ाने के लिए इस भूभाग में सबसे पहले आदमी-औरत से जुड़े सवालों को हल की जरूरत है (यानी, जनाना आबादी के बारे में)। इसी प्रकार आर्थिक विकास दर को ऊँचा उठाने की फ़ौरन ज़रूरत है।

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

एशियन डवलॅपमण्ट बैंक, एशियन डवलॅपमण्ट आउटलुक, प्रासंगिक वर्षों के वार्षिक अंक, मनीला, फिलीपीन्स

महबूब-उल-हक़, ह्यूमन डवलॅपमण्ट सैण्टर, ह्यूमन डवलॅपमण्ट इन साउथ एशिया, विभिन्न सालों के वार्षिक अंक, कराची, पाकिस्तान

नेशन्ज़ डवलॅपमण्ट प्रोग्राम, ह्यूमन डवलॅपमण्ट रिपोर्ट, प्रासंगिक वर्षों के वार्षिक अंक, संयुक्त राष्ट्र संघ, जिनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड

सेन, अमर्त्य, 2000, डवलॅपमण्ट ऐज़ फ्रीडम, रैण्डम हाउस, न्यूयार्क

हक़, महबूब-उल-, 1995 रिलैक्शन्स ऑन ह्यूमन डवलॅपमण्ट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, न्यूयार्क

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भौतिक कल्याण और प्रतिव्यक्ति अथवा समग्र आय के लिहाज से।

2) समदृष्टि, निरन्तरता, उत्पादकता, और सशक्तीकरण।

3) लम्बी ज़िंदगी, ज्ञान और शालीन जीवन-स्तर।

4) मानव विकास में राज्य की एक निर्णायक भूमिका होती है। उसे समस्त साधारण की मानवीय क्षमताओं को सबल करने पर अभिलक्षित नीतियाँ लागू करनी होती हैं। अवसरों का निष्पक्ष वितरण सुनिश्चित करने में उसकी भूमिका अहम् है। इसके अतिरिक्त, राज्य को सक्रिय नीतियाँ बनाने में भाग लेना पड़ता है ताकि विपणन कार्य सम-दृष्टि अपनाये जाने के साथ-साथ कुशलतापूर्वक निबटाया जाना सुनिश्चित हो; और उन स्थानीय संस्थाओं को खड़ा करने अथवा मज़बूती प्रदान करने को बढ़ावा देने में भी जो गतिविधियाँ एवं सेवाओं की एक पूरी शृंखला में भागीदारी एवं सशक्तीकरण हेतु अवसर प्रदान करती हों।

बोध प्रश्न 2

1) अन्य विकासशील भूभागों के मुकाबले, दक्षिण एशिया के पास शिक्षा में निवेश के स्तर कम हैं। नारी-शिक्षा इस भू-भाग में एक उपेक्षित क्षेत्र है। जहाँ साक्षरता का समग्र स्तर 54 प्रतिशत है, नारी-साक्षरता के स्तर 40 प्रतिशत से भी कम हैं। 1990 के दशक में प्राथमिक स्तर लड़कियों की भर्ती में सुधार आया, परन्तु माध्यमिक स्तरों पर उनके स्कूल छोड़ देने की दर काफ़ी ऊँची बनी ही हुई है। श्रीलंका एवं मालदीव में हालाँकि माध्यमिक स्कूलों में भर्ती हुई लड़कियों की संख्या सम्मानजनक रही। माध्यमिक स्तर पर काफ़ी बड़ी संख्या में स्कूल छोड़ देने की दर मानव विकास की प्रक्रिया को दाँव पर लगा देती है। ग़रीबी से जुड़ी अधिकतर समस्याएँ नारी-निरक्षरता से सीधे जुड़ी हैं।

2) दक्षिण एशिया में समस्त स्वास्थ्य दशाएँ और पोषणाहार व स्वास्थ्य-रक्षा का स्तर बहुत प्रोत्साहनकारी नहीं है। यहाँ प्रजनन-दर ऊँची है साथ-ही-साथ मृत्युदर भी। अधिकतर प्रसव उचित चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में होते हैं। कुपोषण के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। खासकर ग्रामीण दक्षिण एशिया में स्वास्थ्य की दशा बहुत निराशाजनक है। पोषणाहार एवं चिकित्सीय देखभाल के मामले में लड़कियों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है। लड़के की ओर तरफदारी और लड़की की ओर लापरवाही पूरे भूभाग में प्राय: हर जगह देखी जाती है। स्वास्थ्य-रक्षा सुविधाओं एवं सुरक्षित पेय जल की पहुँच शहरी क्षेत्र में सुधरी है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र उपेक्षित है। इसका मतलब है कि इस भूभाग की लगभग 70 प्रतिशत (ग्रामीण) जनता पर्याप्त बुनियादी सहुलियतों के अभाव में जीती है।

बोध प्रश्न 3

1) मानव विकास को आगे बढ़ाने में सरकारों की भूमिका अहम् होती है। सार्वजनिक कल्याण पर अभिलक्षित सरकारी नीतियाँ महत्त्व रखती हैं। इसके अतिरिक्त, वे आय का समान वितरण सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। सेना जैसे अनुत्पादक मोर्चों पर ऊँचे खर्चे सामाजिक क्षेत्र के उपलब्ध धनकोष को खा जाते हैं। पाकिस्तान में सरकारी खर्च सेना पर ज़्यादा है और स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर कम। इस असंतुलन को टालने के लिए सुधारकारी कदमों को उठाए जाने की तत्काल आवश्यकता है। इसके अलावा, कामकाज में पारदर्शिता, यानी प्रदूषण रहित परिवेश, का भी महत्त्व है।